भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या: 1004
उत्तर देने की तारीख: सोमवार, 10 फरवरी, 2025
21 माघ, 1946 (शक)

ओडिशा में सांस्कृतिक विरासत का संवर्धन और संरक्षण

1004. श्रीमती संगीता कुमारी सिंह देव:

क्या **संस्कृति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) विगत चार वित्तीय वर्षों तथा वर्तमान वित्तीय वर्षों के दौरान ओडिशा राज्य में सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु आवंटित, जारी तथा प्रयोग की गई निधियों का वर्षवार ब्यौरा क्या है;

(ख) वर्ष 2022-23 तथा 2023-24 के दौरान कोणार्क सूर्य मंदिर, रत्नागिरी बौद्ध मठ तथा अन्य प्रमुख स्मारकों सहित उक्त राज्य में विरासत स्थलों के जीर्णोद्धार एवं संरक्षण परियोजनाओं की स्थित क्या है;

(ग) सरकार द्वारा उक्त राज्य में, विशेष रूप से जनजातीय बहुल जिलों में पारंपरिक कला, शिल्प तथा लोक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है तथा इन पहलों के परिणाम क्या रहे; और

(घ) क्या सरकार के पास उक्त राज्य में नए सांस्कृतिक संस्थान अथवा संग्रहालय स्थापित करने का कोई प्रस्ताव है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
संस्कृति और पर्यटन मंत्री
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): विगत चार वर्षों एवं वर्तमान कित्तीय वर्ष के दौरान ओडिशा राज्य में केंद्रीय संरक्षित स्मारकों के संरक्षण एवं परिरक्षण के लिए आवंटित एवं व्यय की गई निधियों का वर्ष वार ब्यौरा निम्नानुसार है :

(राशि करोड़ रुपए में)

क्र सं	वर्ष	आवंटित राशि	खर्च की गई राशि
1	2020-21	3.63	3.63
2	2021-22	8.23	8.23
3	2022-23	13.18	13.17
4	2023-24	12.29	12.29
5	2024-25 (29.01.2025 तक)	8.15	6.25

संग्रहालय अनुदान योजना के अन्तर्गत नए संग्रहालय की स्थापना/विद्यमान संग्रहालय के विकास के लिए जारी की गई निधियों का ब्यौरा निम्नानुसार है।

(राशि करोड़ रुपए में)

क्र सं	वर्ष	संग्रहालय अनुदान योजना के अन्तर्गत जारी की गई निधियाँ
1	2020-21	----
2	2021-22	----
3	2022-23	----
4	2023-24	93.24
5	2024-25 (आज की तारीख तक)	----

(ख): वर्ष 2022-23 और 2023-24 के दौरान कोणार्क सूर्य मंदिर, रत्नागिरी बौद्ध मठ सहित ओडिशा राज्य के विख्यात धरोहर स्थलों के पुनरोद्धार एवं संरक्षण परियोजनाओं की स्थिति का ब्यौरा **अनुबंध-I** में दिया गया है।

(ग): भारत सरकार ने ओडिशा राज्य के जनजातीय बाहुल्य जिलों सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण तथा देश की पारंपरिक एवं प्राचीन संस्कृति के संवर्धन हेतु अनेक प्रयास किए हैं। जिसमें सरकार द्वारा किए गए तत्संबंधी प्रयासों का ब्यौरा **अनुबंध-II** में दिया गया है।

(घ): वर्तमान में भारत सरकार के पास ओडिशा राज्य में नए सांस्कृतिक संस्थान और संग्रहालय स्थापित करने का कोई प्रस्ताव नही है।

अनुबंध-I

लोकसभा में दिनांक 10.02.2025 को उतरार्थ अतारांकित प्रश्न संख्या 1004 के भाग (ख) के उत्तर में संदर्भित अनुबंध

वर्ष 2022-23 एवं वर्ष 2023-24 के दौरान, कोणार्क सूर्य मंदिर, रत्नागिरी बौद्ध मठ सहित ओडिशा राज्य के विख्यात धरोहर स्थलों के पुनरोद्धार एवं संरक्षण की स्थिति का ब्यौरा

वर्ष 2022-23

क्रम संख्या	स्मारक का नाम	संरक्षण कार्य का नाम
01.	सूर्य मंदिर, कोणार्क जिला, पुरी	1. सूर्य मंदिर, कोणार्क की प्राकार दीवार के शीर्ष कापिंग पर पानी की रिसाव का मरम्मत
		2. मुख्य मार्ग के क्षतिग्रस्त/धंस गए खंडोलाइट पत्थर के फर्श की मरम्मत और पुनर्स्थापन
		3. सूर्य मंदिर, कोणार्क के जगमोहन के अंदर और बाहर की ओर से रेत को हटाना और इसका स्थिरीकरण
02.	श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी	1. रथ यात्रा (2022) के दौरान गर्भगृह, जगमोहन और मंदिर के अन्य स्थानों के अंदर संरक्षण और पुनर्स्थापन कार्य।
		2. श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के परिसर में नटमंदिर, भोगमंदिर और भोग मार्ग के अंदर संरक्षण और पुनर्स्थापन कार्य।
		3. पुजापंडा निजोग संस्कृत विद्यालय, सुर और महासुर निजगो के गोदाम की छत का मरम्मत मंदिर के अन्दर मरम्मत का कार्य
		4. श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के परिसर में इंद्राणी मंदिर का संरक्षण और पुनर्स्थापन।
		5. मंदिर परिसर में ईशानेश्वर मंदिर की संरचना का संरक्षण
		6. श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के बाईसी पहाचा के दोनों तरफ के आंतरिक प्रवेश गुमटा की दशकों पुरानी दीवार से ढलाई की गई चूने की प्लास्टरिंग को हटाना।
		7. श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के परिसर में रोसाघर (पवित्र रसोई परिसर) में पत्थर की फर्श बिछाने का कार्य
03.	चंद्रशेखर ज्यू मंदिर, कपिलाश, ढेंकानाल	प्राचीन सीढ़ियों, फर्श, जापमंडप, अनुष्ठान टैंक आदि का पुनर्स्थापन और चंद्रशेखर ज्यू मंदिर, कपिलाश का विकास कार्य।
04.	धर्म महाकाल मंदिर, रत्नागिरी	रत्नागिरी, जिला जाजपुर में देवताओं के स्थान परिवर्तन के लिए आधारभूत सुविधाओं/अनुष्ठानों के साथ धर्म महाकाल मंदिर और इसके आसपास के क्षेत्र का विकास।
05.	श्री लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर	छत का चूना सुरखी प्लास्टर, जगमोहन और संयुक्त छत का काम।

06.	श्री लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर	(1) डबल स्कैफोल्डिंग प्रदान करना, (2) पुराने क्षतिग्रस्त लकड़ी के पैनल दरवाजे को सावधानी से निकालना, (3) मौजूदा नष्ट हो चुके और फूले हुए पीतल के क्लैडिंग को हटाना, (4) क्षतिग्रस्त, नष्ट हो चुके चुके, फूले हुए, झुके हुए लकड़ी के पैनल दरवाजे को काटना, (5) मरम्मत के लिए मौसम अनुकूल साल की लकड़ी प्रदान करना, (6) लकड़ी के फाटक के नीचे तीव्र गति के लिए स्टेनलेस स्टील होल्ड फास्ट और बेस प्लेट को फिक्स करना, (7) पुराने उपयोग की सामग्री का उपयोग करके पीतल की क्लैडिंग करना, (8) नए दरवाजे पर लकड़ी को सुरक्षा प्रदान करना और लागू करना, (9) एपॉक्सी पेंट लगाना , (10) अस्थायी लकड़ी का दरवाजा उपलब्ध करना, (11) पीतल की क्लैडिंग के बाद मरम्मत किए गए नए दरवाजे को लगाना।
07.	सहस्रलिंग टैंक, भुवनेश्वर	(1) जलकुम्भी की सफाई, (2) मोर्टार के साथ रेसेस पॉइंटिंग, (3) मलबा/अयोग्य और कचरे के सामग्री का निपटान, (4) पानी के निकासी के लिए चैनल बनाना, (5) कीचड़ वाली मिट्टी की सफाई, (6) क्षतिग्रस्त लेटराइट/रेत पत्थर को हटाना, (7) मोर्टार के साथ लेटराइट/रेत पत्थर की मौरंग, रेसेस पॉइंटिंग।
08.	मेघेश्वर, भुवनेश्वर	(1) मंदिर के निकट जंगली वनस्पति, झाड़ियों, लताओं को हटाकर स्थल की सफाई, (2) जलकुम्भी की सफाई, (3) पानी के निकासी के लिए चैनल बनाना, (4) कीचड़ वाली मिट्टी की सफाई, (5) क्षतिग्रस्त लेटराइट/रेत पत्थर को हटाना, (6) मोर्टार के साथ लेटराइट/रेत पत्थर की मेसनरी, रेसेस पोइंटिंग, (7) मलबा/अयोग्य और अपशिष्ट सामग्री का निपटान।
09.	युधिष्ठिर मंदिर, महेंद्रगिरी, जिला गजपति	(1) जंगली वनस्पति को हटाकर स्थल की सफाई, (2) डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम स्थापित करना, (3) जोड़ों को खुरचना, (4) मुख्य मंदिर के अंदर फर्श में काले ग्रेनाइट पत्थर की मेसनरी , (5) प्राचीन संरचनाओं और फर्श के अवशेषों पर रेसेस पोइंटिंग, (6) खोखले ट्यूब, चैनलों आदि के लिंटेल पर स्टेनलेस स्टील चढ़ाना , (7) संकेत सूचक (सीएनबी) और दिशा बोर्ड स्थापित करना, (8) चारदीवारी के लिए खुदाई का कार्य, (9) नींव में कठोर पत्थर के साथ यादृच्छिक मलबे की मेसनरी , (10) चबूतरा स्तर के ऊपर सुपरस्टक्चर में कठोर पत्थर के साथ कोर्स्ड मलबे की मेसनरी (11) रिटेनिंग दीवारों, कोपिंग आदि में कंक्रीट सीमेंट बिछाना, (12) निर्मित खंडों में वेल्डेड

		स्टील कार्य और पेंटिंग, (13) पत्थर के काम पर पोइंटिंग , (14) खुदाई की गई उपलब्ध मिट्टी को भरना; रेत के साथ चबूतरा में मिटटी भरने का कार्य
10.	ब्रह्मेश्वर मंदिर	(1) मंदिर के निकट जंगली वनस्पति, झाड़ियों, लताओं को हटाकर स्थल की सफाई, (2) जलकुम्भी की सफाई, (3) पानी के निकासी के लिए चैनल बनाना, (4) कीचड़ वाली मिट्टी की सफाई, (5) क्षतिग्रस्त लेटराइट/रेत पत्थर को हटाना, (6) मोर्टार के साथ लेटराइट/रेत पत्थर की मेसनरी, रेसेस पोइंटिंग, (7) मलबा/अयोग्य और कचरे के सामग्री का निपटान।
11.	कुंती मंदिर, महेंद्रगिरी, गजपति	(1) जंगली वनस्पति को हटाकर स्थल की सफाई, (2) डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम स्थापित करना, (3) पत्थर की मेसनरी सतह के जोड़ों को खींचना, (4) छिद्र ड्रिल करना और एक्रिलिक पॉलिमर इमल्शन के साथ पीएमसी ग्राउटिंग करना (5) रेसेस पॉइंटिंग, (6) सामग्री को स्टॉक से कार्य स्थल पर स्थानांतरित करना, (7) भूमि कार्य के लिए फर्श में अतिरिक्त मिट्टी को हटाना, (8) बालू से चबूतरा को भरना, (9) मोर्टार के साथ खंडोलाइट पत्थर की फर्श, (10) चारदीवारी की ग्रिल संरचना के लिए स्टील का काम, (11) रिटेनिंग दीवारों में सीमेंट कंक्रीट डालना, (12) सौर स्ट्रीट लाइट और पानी के पंप की स्थापना करना, (13) पीने के पानी की सुविधा प्रदान करना, (14) एमएस एंगल के साथ दिशासूचक बोर्ड को स्थापित करना, (15) आगंतुकों के लिए खंडोलाइट पत्थर की बेंचों को ठीक करना और स्थापित करना, (16) संकेतक (सीएनबी) स्थापित करना, (17) सिंथेटिक इनेमल पेंट के साथ एमएस ग्रिल संरचना का पेंटिंग, (18) अपशिष्ट सामग्री का निपटान।
12.	रानीपुर, झरियाल, बोलांगीर में स्मारक का समूह (पूर्वी दिशा की ओर)	(1) नींव की खाई में मैनुअल तरीके से खुदाई का काम, (2) नदी की रेत से आपूर्ति और भराई, (3) नींव में पीसीसी बिछाना, (4) नींव और चबूतरा में कठोर पत्थर के साथ रैंडम रब्बल मेसनरी, (5) चबूतरा स्तर के ऊपर सुपरस्टक्चर में कठोर पत्थर के साथ रैंडम रब्बल मेसनरी, (6) कोपिंग में कंक्रीट सीमेंट बिछाना और सीसी ब्लॉक्स (ग्रिल्स को फिक्स करने के लिए), (7) पत्थर के काम पर सीमेंट मोर्टार के साथ फ्लश पॉइंटिंग, (8) एमएस ग्रिल्स में आवश्यकतानुसार स्टील का काम, (9) स्टील के धातु को पेंट करना.
13.	भुवनेश्वर में सिसुपालगढ़ में खुदाई के अवशेष	(1) जंगली वनस्पति की वृद्धि को हटाकर स्थल की सफाई, (2) चारदीवारी के लिए सतह की सफाई , (3) चारदीवारी के लिए भूमि खुदाई कार्य, (4) चारदीवारी के लिए चबूतरा और भराई, (5) कंक्रीट सीमेंट को ठीक से बिछाना, (6) नींव और चबूतरा में कठोर पत्थर के साथ पृथक ढंग से चट्टान

		की मेसनरी , (7) सुपर संरचना में सपाट एशलर में सफेद बलुआ पत्थर का काम, (8) चारदीवारी के लिए स्टील का काम, (9) रिटेनिंग दीवारों में कंक्रीट सीमेंट बिछाना, ग्रिल पोस्ट को फिक्स करने के लिए रिटर्न दीवारें, (10) प्रवेश द्वार के लिए स्टील का काम, (11) चारदीवारी के स्टील के काम पर सिंथेटिक इनेमल पेंट के साथ पेंटिंग, (12) खाइयों में उपलब्ध खुदाई की गई मिट्टी को भरना, (13) कचरे/मलबे का निपटान।
14.	स्मारकों का समूह (सोमेश्वर, इंद्रलाथ, कपिलेश्वर महादेव, धबालेश्वर महादेव और प्राचीन टैंक), रानीपुर-झरियाल, बोलांगीर	(1) ईंट के काम को ध्वस्त करना, (2) मिट्टी खुदाई का काम, (3) नींव और चबूतरा में कठोर पत्थर के साथ पृथक मलबे की मेसनरी , (4) सुपरस्टक्चर में कठोर पत्थर के साथ पृथक मलबे की मेसनरी, (5) सीमेंट कंक्रीट को कोपिंग को सीसी ब्लॉकों में डालना, (6) सीमेंट मोर्टार के साथ पत्थर के पर फ्लश पॉइंटिंग, (7) एमएस ग्रिल में स्टील का काम, (8) स्टील को पेंट करना, (9) सीएनबी की स्थापना, (10) बैठने के बेंच उपलब्ध करना, (11) डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम की आपूर्ति और स्थापना, (12) पत्थर की मेसनरी सतह के जोड़ों को निकालना, (13) चूने में एशलर पत्थर की मेसनरी के जोड़ों की पॉइंटिंग।

वर्ष 2023-24

क्रम संख्या	स्मारक का नाम	संरक्षण कार्य का नाम
01.	सूर्य मंदिर, कोणार्क जिला, पुरी	सूर्य मंदिर, कोणार्क के जगमोहन के अंदर और बाहर की ओर से रेत हटाना और इसका स्थिरीकरण करना
02.	श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी	1.श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी में रथ यात्रा महोत्सव (2023-2024) के दौरान गर्भगृह, जगमोहन और मंदिर के अन्य स्थानों के अंदर संरक्षण और पुनर्स्थापन कार्य।
		2.श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी में रथ यात्रा महोत्सव (2023-2024) के दौरान नटमंदिर, भोगमंदिर, भोगा मार्ग और मंदिर के अन्य स्थानों के अंदर संरक्षण और पुनर्स्थापन कार्य।
		3. श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी में नटमंदिर के अंदर चार केंद्रीय स्तंभों के प्रमुख पत्थर को एस एस संकुचन द्वारा मजबूत और पुनर्निर्माण करना।
		4. श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी में दक्षिण दिशा के प्रवेश द्वार की मरम्मत और दक्षिण

		दिशा के कुम्बीबेद के लिए सीढ़ियों के साथ आंतरिक पहुंच।
		5.श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के दक्षिणी पक्ष में मर्दा रोशघर (पुरानी रसोई) की मरम्मत और पुनर्स्थापन का कार्य
		6.श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी में नाटमंडप के अंदरूनी हिस्से की संरचनात्मक मजबूती का कार्य
		7.श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी के चहानी मंडप के पास दक्षिण पूर्व प्लेटफॉर्म में खंडोलाइट पत्थर के फर्श की मरम्मत और पुनः बिछाने का कार्य।
03.	धर्म महाकाल मंदिर, रत्नागिरी	1. रत्नागिरी, जिला जाजपुर में देवताओं के स्थान परिवर्तन के लिए आधारभूत सुविधाओं/अनुष्ठानों के साथ धर्म महाकाल मंदिर और इसके आसपास के क्षेत्र का विकास।
		2. धर्म महाकाल मंदिर, जिला जाजपुर रत्नागिरी का विकास, जिसमें मंदिर में स्थान परिवर्तित देवताओं के बाद यह आवश्यक है, जिसमें इनका परिधीय विकास शामिल है।
		3. मंदिर परिसर में, जहां भी आवश्यक हो, ईंट/पत्थर के बौद्ध स्तूपों से पानी की रिसाई को रोकना।
04.	बनेश्वरनासी, पदामल, जिला – कटक का प्राचीन स्थल	प्राचीन स्थल बनेश्वरनासी, पदामल, जिला कटक का संरक्षण और विकास कार्य।
05.	चंद्रशेखर ज्यू मंदिर, कपिलाश, ढेंकानाल	कपिलाश, जिला - ढेंकानाल में चंद्रशेखर ज्यू मंदिर के मुख्य मंदिर और जगमोहन का संरक्षण।
06.	रानीपुर, झरियाल, बोलांगीर में स्मारक समूह (पूर्वी दिशा)	(1) नींव की खाई में मैनुअल तरीके से खुदाई का काम, (2) नदी की रेत से आपूर्ति और भराई, (3) नींव में पीसीसी बिछाना, (4) नींव और चबूतरा में कठोर पत्थर के साथ रैंडम रब्बल मेसनरी, (5) चबूतरा स्तर के ऊपर सुपरस्टक्चर में कठोर पत्थर के साथ रैंडम रब्बल मेसनरी, (6) कोपिंग में सीमेंट कंक्रीट बिछाना और सीसी ब्लॉक्स (ग्रिल्स को फिक्स करने के लिए), (7) पत्थर के काम पर सीमेंट मोर्टार के साथ फ्लश पॉइंटिंग, (8) एमएस ग्रिल्स में आवश्यकतानुसार स्टील का काम, (9) स्टील धातु पर पेंट करना।
07.	राजा रानी मंदिर	(1) क्षतिग्रस्त, असमान, असंतुलित बालू पत्थर/लेटेराइट पत्थर को हटाना, (2) क्षतिग्रस्त स्टील को हटाना, (3) पथों पर बालू पत्थर की मेसनरी(4) स्पर्श टाइल (दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिए) बिछाना (5) पथों के दोनों ओर जीआई श्रृंखला के साथ खंडोलाइट पत्थर के खंभे/पोस्ट प्रदान करना और स्थापित करना, (6) पथों के दोनों ओर बोलार्ड की आपूर्ति और स्थापना, (7) रेसेस पोइंटिंग, (8) निर्मित ट्यूबुलर ट्रस

		में स्टील कार्य आदि, (9) स्पर्श टाइल बिछाने के लिए पथ पर लेटेराइट पत्थर की मेसनरी बिछाना, (10) अपशिष्ट सामग्री का निपटान, (11) पुराने टिकट काउंटर का नवीनीकरण और पुनर्निर्माण।
08.	सिसुपालगढ़ में खुदाई के अवशेष	(1) जंगली वनस्पति की वृद्धि को हटाकर स्थल की सफाई, (2) चारदीवारी के लिए सतह की सफाई (3) चारदीवारी के लिए भूमि खुदाई का कार्य, (4) चारदीवारी के लिए चबूतरा में आपूर्ति और भराई, (5) कंक्रीट सीमेंट को ठीक स्थिति में डालना, (6) नींव और चबूतरा में कठोर पत्थर के साथ पृथक ढंग से चट्टान की मेसनरी , (7) सुपर संरचना में सपाट ऐशलर में सफेद बलुआ पत्थर का काम, (8) चारदीवारी के लिए स्टील का काम, (9) रिटेनिंग दीवारों में कंक्रीट सीमेंट डालना, ग्रिल पोस्ट को फिक्स करने के लिए रिटर्न दीवारें, (10) प्रवेश द्वार के लिए स्टील का काम, (11) चारदीवारी के स्टील पर सिंथेटिक इनेमल पेंट के साथ पेंटिंग, (12) खाइयों में खुदाई की गई मिट्टी को भरना, (13) कचरे/मलबे का निपटान।
09.	पापनाशिनी टैंक, भुवनेश्वर	(1) भूमि खुदाई का कार्य, (2) रेत से चबूतरा की भराई, (3) निर्दिष्ट ग्रेड का कंक्रीट सीमेंट लगाना, (4) मोर्टार के साथ लेटराइट/रेत पत्थर की मेसनरी , (5) बाहरी और आंतरिक पक्ष पर डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम स्थापित करना, (6) पत्थर के जोड़ों को निकालना, (7) प्राचीन संरचना और फर्श के लिए मोर्टार के साथ रेसेस पॉइंटिंग, (8) चारदीवारी की ग्रिल संरचना के लिए स्टील कार्य, (9) निर्दिष्ट ग्रेड का कंक्रीट सीमेंट लगाना, (10) सिंथेटिक एनामेल पेंट के साथ पेंटिंग, (11) मलबा/अयोग्य सामग्री का निपटान।
10.	रामेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर	(1) अनुपयोगी, क्षतिग्रस्त, असमान लेटराइट/रेत पत्थर को हटाना/अलग करना, (2) डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम और सीढ़ी प्रणाली स्थापित करना, (3) पत्थर की मेसनरी के जोड़ों को निकालना, (4) 0112 मिमी व्यास के छिद्रों को 300 मिमी गहराई तक ड्रिल करना, (5) जगमोहन और मुख्य मंदिर में एक्रिलिक पॉलिमर इमल्शन आदि के साथ छत क्षेत्र का पीएमसी ग्राउटिंग, (6) प्राचीन संरचना और फर्श पर रेसेस पोइंटिंग, (7) फर्श, जगमोहन के अंदर के फर्श, परिक्रमा फर्श, प्रवेश द्वार के फर्श और सीढ़ी के कुएं के फर्श आदि पर रेत पत्थर को फिर से स्थापित करना, (8) मोर्टार के साथ सीढ़ी के कुएं की दीवार पर रेत पत्थर को फिर से स्थापित करना, (9) कचरा/मलबा/अयोग्य सामग्री का निपटान, (10) सीढ़ी के कुएं के कवर, मुख्य मंदिर के दरवाजे और जगमोहन में निर्मित ट्यूबुलर, चौकोर या आयताकार खोखले ट्यूब में स्टील का काम।
11.	रामेश्वर मंदिर, भुवनेश्वर	(1) स्थल की सफाई, (2) जमीन की सतह को समतल करना, (3) अतिरिक्त मिट्टी

		को हटाना, (4) पानी की टंकी से जल निकासी, (5) पानी निकालने के लिए चैनल बनाना, (6) नींव में मैनुअल तरीके से खुदाई का काम, (7) मोर्टार के साथ कंक्रीट सीमेंट डालना, (8) मोर्टार के साथ लेटराइट/रेत पत्थर की मेसनरी , (9) जोड़ों को खुरचकर निकालना, (10) मोर्टार के साथ रेसेस पोइंटिंग, (11) पत्थर की बेंचों की स्थापना, (12) सौर स्ट्रीट लाइट की स्थापना और आपूर्ति, (13) अपशिष्ट सामग्री का निपटान।
12.	स्मारकों का समूह (सोमेश्वर, इंद्रलाथ, कपिलेश्वर महादेव, धबालेश्वर महादेव और प्राचीन टैंक), रानीपुर-झरियाल, बोलांगीर	(1) ईंट के काम को ध्वस्त करना, (2) मिट्टी खुदाई का काम, (3) नींव और चबूतरा में कठोर पत्थर के साथ पृथक मलबे की मेसनरी , (4) सुपरस्टक्चर में कठोर पत्थर के साथ पृथक मलबे की मेसनरी, (5) कंक्रीट सीमेंट को कोपिंग सीसी ब्लॉकों में डालना, (6) सीमेंट मोर्टार के साथ पत्थर के काम पर फ्लश पॉइंटिंग, (7) एमएस ग्रिल में स्टील का काम, (8) स्टील को पेंट करना, (9) सीएनबी की आपूर्ति और स्थापना, (10) बैठने के बेंच उपलब्ध करना, (11) डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम की आपूर्ति और स्थापना, (12) पत्थर की मेसनरी सतह के जोड़ों को निकालना, (13) चूने में एशलर पत्थर की मेसनरी के जोड़ों की पॉइंटिंग।
13.	उदयगिरी और खंडगिरी जैन गुफाएँ	(1) भूमि खुदाई कार्य, (2) रेत से चबूतरा की भराई, (3) कंक्रीट सीमेंट को ठीक से रखना , (4) फैक्ट्री निर्मित कंक्रीट सीमेंट इंटर लॉकिंग पेवर ब्लॉक को रखना, (5) तक्टिले टाइल को रखना, (6) पेयजल, टिकट काउंटर, चारदीवारी पर बारीकी से तैयार की गई लेटराइट पत्थर की मेसनरी रखना, (7) पत्थर की मेसनरी सतह के जोड़ों को निकालना, (8) लेटराइट पत्थर की मेसनरी पर फ्लश पॉइंटिंग, (9) रेलिंग, दरवाजे और ऐसे कार्यों के रूप में स्टील कार्य, (10) रेलिंग स्थापित करना, (11) सफेद रेत पत्थर की मेसनरी का कार्य जिसमें पॉइंटिंग शामिल है, (12) टाइल को तोड़ना, (13) कंक्रीट सीमेंट को ध्वस्त करना, (14) सिंथेटिक इनेमल पेंट के साथ पेंटिंग, (15) बांस से बने कूड़ेदान की आपूर्ति।
14.	कुंती मंदिर, महेंद्रगिरी, गजपति	(1) जंगली वनस्पति को हटाकर स्थल की सफाई, (2) डबल स्कैफोल्डिंग सिस्टम स्थापित करना, (3) पत्थर की मेसनरी सतह के जोड़ों को खींचना, (4) छिद्र ड्रिल करना और एक्रिलिक पॉलिमर इमल्शन के साथ पीएमसी ग्राउटिंग करना (5) रेसेस पॉइंटिंग, (6) सामग्री को स्टॉक से कार्य स्थल पर स्थानांतरित करना, (7) भूमि कार्य के लिए फर्श में अतिरिक्त मिट्टी को हटाना, (8) बालू से चबूतरा को भरना, (9) मोर्टार के साथ खंडोलाइट पत्थर की फर्श, (10) चारदीवारी की ग्रिल संरचना के लिए स्टील का काम, (11) रिटेनिंग दीवारों में कंक्रीट सीमेंट डालना, (12) सौर स्ट्रीट लाइट और पानी के पंप की स्थापना करना, (13) पीने के पानी की सुविधा

		प्रदान करना, (14) एमएस एंगल के साथ दिशासूचक बोर्ड को स्थापित करना, (15) आगंतुकों के लिए खंडोलाइट पत्थर की बेंचों को ठीक करना और स्थापित करना, (16) संकेतक (सीएनबी) स्थापित करना, (17) सिंथेटिक इनेमल पेंट के साथ एमएस ग्रिल संरचना का पेंटिंग, (18) अपशिष्ट सामग्री का निपटान।

अनुबंध-II

लोकसभा में दिनांक 10.02.2025 को उत्तरार्थ अत्तारांकित प्रश्न संख्या 1004 के भाग (ग) के उत्तर में संदर्भित अनुबंध

भारत सरकार देश की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को मान्यता देती है। संस्कृति मंत्रालय के तहत राष्ट्रीय अकादमियों ने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों, राज्य अकादमियों और अन्य सरकारी निकायों के साथ रणनीतिक साझेदारियों के माध्यम से अपनी पहुँच का विस्तार करके एक जीवंत कला पारिस्थितिकी तंत्र को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया है। ये संस्थाएँ और केंद्र, विशेष रूप से, जनजातीय समुदायों की आवश्यकताओं पर जोर देते हुए अपने-अपने क्षेत्रों की विविध सांस्कृतिक धरोहर को सक्रिय रूप से संवर्धित और संरक्षित करते हैं।

संस्कृति मंत्रालय ने अपने स्वायत्त निकायों के माध्यम से ओडिशा राज्य सहित भारत में जनजातीय समुदायों की पारंपरिक और प्राचीन संस्कृतियों को संरक्षित और संवर्धित करने हेतु कई कदम उठाए हैं जो निम्नानुसार हैं:

(i) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) ने विशेष रूप से ओडिशा में जनजातीय संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने के लिए कई पहलें की हैं। इन पहलों में रिकॉर्डिंग और लिखित अभिलेखों के माध्यम से जनजातीय रीति-रिवाजों का दस्तावेजीकरण, जनजातीय कलाकृतियों को प्रदर्शित करने के लिए संग्रहालय जैसे स्थानों का निर्माण करना, जनजातीय संगीत और नृत्य का उल्लास मनाने वाले त्योहारों का आयोजन करना, जनजातीय युवाओं के लिए छात्रवृत्तियाँ प्रदान करना, विभिन्न जनजातियों के बारे में ज्ञान को संरक्षित करना और पारंपरिक कलाओं को पुनर्जीवित करना शामिल है।

(ii) ललित कला अकादमी शिविरों, प्रदर्शनियों और प्रकाशनों के माध्यम से जनजातीय और लोक कला का समर्थन करती है। इसका भुवनेश्वर क्षेत्रीय केंद्र ओडिशा और पड़ोसी राज्यों के जनजातीय और समकालीन कलाकारों के लिए शिविरों का आयोजन करता है, जो उन्हें अपने कार्य को प्रदर्शित करने के लिए एक समुचित मंच प्रदान करता है।

(iii) संगीत नाटक अकादमी भारत की प्रदर्शन कलाओं, जिसमें लोक और जनजातीय परंपराएँ शामिल हैं, को संरक्षित और संवर्धित करने का कार्य करती है। यह अकादमी त्योहारों, कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों का आयोजन करती है और अनुदानों के माध्यम से, दस्तावेजीकरण और अनुसंधान किए जाने हेतु सहायता करती है। 'देशज', लोक जन प्रथा उत्सव, लोक संगम, और उत्कर्ष जैसे कार्यक्रम जनजातीय संस्कृति और परंपराओं को मनाते हैं।

*****